

حراستِ توحید
हिरासते तौहीद

العقيدة الصحيحة وما يضادها
सहीद धरुलामी अकीद
और उसके मनाही उमूर

समाहृत अशु-शौभ अब्दुल अजीज बिन अब्दुल्लाह बिन भाज (र.अ.)



Islamic Information Centre-Kutch

حراسۃ توحید

હિરાસતે તૌહીદ

العقيدة الصحيحة وما يضادها

સહીહ ઇસ્લામી અકીદા

और उसके मनाई उभूर

તાલીફ

સમાહતુશ્-શૈખ

અબ્દુલ અઝીઝ બિન અબ્દુલ્લાહ બિન બાઝ (રહ.)

(સાબિક મુફ્તીએ આ'ઝમ, સઉદી અરબ)

ગુજરાતી લિપિયાંતર : મુહમ્મદ જમાલ પટીવાલા

— શાએકદા —



ઇસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ

નૂરાની હોટલ કે પાસ, ડાંડા બજાર, ભૂજ (કચ્છ)

મોબાઇલ : (+91) 8401786172 Blog : www.iickutch.blogspot.in

Saheeh Islami Aqeedah-Hirasate Tauheed (Gujarati Lipiyantar)
Hirasate Tauheed (Urdu)
By : Samahat As-Shaikh Abdul Aziz Bin Abdullah Bin Baaz
Gujarati Lipiyantar : Muhammad Jamal Patiwala

—: Publisher :—
ISLAMIC INFORMATION CENTRE-KUTCH
Near Hotel Noorani, Danda Bazar, BHUJ (Kutch)
Mobile : 8401 7861 72,
Blog : www.iickutch.blogspot.in

प्रथम आवृत्ति
प्रत : १०००
नवेम्बर, २०१७

पृष्ठ : ३२

मुद्रक : युनिक ओईसेट, अहमदाबाद

“तुम्हारी तरफ़ और तुमसे पहले गुज़रे हुवे तमाम अंबिया की जानिब ये वही भेजो जो यूकी है के अगर तुमने शिर्क किया तो तुम्हारा अमल जायेअ हो जायेगा और तुम ખસारे में रहोगे.” (सूर: जुमर, ३८:६५)

कुरआने-हकीम की बहुत सी आयात इस मङ्गल की तरजुमानी करती हैं. अल्लाह त्आला की किताबे-मुबीन और उसके रसूले-अमीन ﷺ की सुन्नत से जिस सहीह अकीदे के षदो-पाल वाजेह होते हैं, वो ँजमावी तौर पर ये है : अल्लाह त्आला पर, उसके इरिशतों, उसकी किताबों, उसके रसूलों और रोजे आभिरत पर ँमान और इस बात पर ँमान के अख्ठी-भूरी तकदीर अल्लाह त्आला की तरफ़ से है. ँन छे अरकान पर सहीह अकीदे की असास है, जिसके ँस्तहकाम के लिये अल्लाह की किताब नाज़िल हुँ है और ँसीके लिये अल्लाह त्आला ने अपने रसूल हज़रत मुहम्मद ﷺ को मजुस इरमाया.

अल्लाह ओर उसके रसूल ﷺ ने जिन गैबी उमूर की षबर दी है ओर जिन पर ँमान लाना हर मुसलमान के लिये ज़रूरी है, सभके सभ ँन्हीं छे बुनियादी अरकान की तफ़सीर व तरजुमानी है, जो किताब व सुन्नत के ज़रिये की गँ. ँरशादे बारी त्आला है :

لَيْسَ الْبِرُّ أَنْ تُولُّوا وُجُوهَكُمْ قِبَلَ الْمَشْرِقِ وَالْمَغْرِبِ وَلَكِنَّ الْبِرَّ
مَنْ أَمَنَ بِاللَّهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ وَالْمَلَائِكَةِ وَالْكِتَابِ وَالنَّبِيِّينَ ۗ

“नेकी ये नहीं के तुम अपने चेहरे मशूरिक की तरफ़ कर लो, या मगूरिब की तरफ़, बल्के नेकी ये है के आदमी अल्लाह, यव्मे आभिरत, मलाँका, अल्लाह की नाज़िल की हुँ किताब और उसके पयगंबरो पर ँमान ले आये.”

(सूर: बकरह, २:१७७)

नीज़ इरमाया :

أَمِنَ الرَّسُولُ بِمَا أُنزِلَ إِلَيْهِ مِنْ رَبِّهِ وَالْمُؤْمِنُونَ ۗ كُلٌّ آمَنَ بِاللَّهِ
وَمَلَائِكَتِهِ وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ ۗ

“रसूल उस ह्दिद्यत पर ँमान लाया है जो उसके रब की तरफ़ से उस पर

नाज़िल हुई है और मोमिनों ने भी खिदायत को दिल से तस्लीम कर लिया है. ये सब अल्लाह, उसके इरिशतों, उसकी किताबों और उसके रसूलों को मानते हैं (और उनका कौल ये है के) हम उसके रसूलों में से किसी एक में भी तफ़रीक नहीं करते.” (सूर: अकरह, २:२८५)

नीज़ इरमाया :

يَا أَيُّهَا الَّذِينَ آمَنُوا آمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ وَالْكِتَابِ الَّذِي نَزَّلَ عَلَىٰ
رَسُولِهِ وَالْكِتَابِ الَّذِي نَزَّلَ مِن قَبْلُ ۗ وَمَنْ يَكْفُرْ بِاللَّهِ وَمَلَائِكَتِهِ
وَكُتُبِهِ وَرُسُلِهِ وَالْيَوْمِ الْأَخِيرِ فَقَدْ ضَلَّ ضَلَالًا بَعِيدًا ﴿٣٠﴾

“अय ईमानदारों ! ईमान लाओ अल्लाह पर, उसके रसूल पर, उस किताब पर जो अल्लाह ने अपने रसूल पर नाज़िल की है और उस किताब पर जो ईससे पेहले वो नाज़िल कर यूका है, जिसने अल्लाह, उसके मलाईका, उसकी किताबों, उसके रसूलों और रोज़े-आभिरत से कुफ़ किया वो गुमराही में भटककर बहुत दूर निकल गया.” (सूर: निसा, ४:१३६)

और इरमाया :

أَلَمْ تَعْلَمُ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۗ إِنَّ ذَلِكَ فِي كِتَابٍ
إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿٣١﴾

“क्या तुम नहीं जानते के आसमान ओर ज़मीन की हर चीज़ अल्लाह के ईल्म में है ? सब कुछ एक किताब में दर्ज़ है. अल्लाह के लिये ये कुछ मुश्किल नहीं.” (सूर: अज, २२:७०)

ईन बुनियादी अकाईद पर जो अल्लाहीस दलावत करती है वो बहुत ज़्यादा है. मसलन्, वो मशहूर हदीस, जिसे ईमाम मुस्लिम رحمته ने अपनी सहीह में अभीरुल-मु’मिनीन हज़रत उमर बिन अल-भत्ताब رضي الله عنه से रिवायत किया है के हज़रत जिब्रईल عليه السلام ने रसूलुल्लाह ﷺ से ईमान के मुताव्लिक दरयाफ़्त किया, तो आपने इरमाया :

“ईमान ये है के तुम ईमान लाव अल्लाह पर, उसके इरिशतों पर, उसकी

किताबों, उसके रसूलों और यवूमे-आभिरत पर और इस बात पर के अच्छी-बूरी तकदीर अल्लाह तआला की तरफ़ से है.”

अेक मुसलमान के लिये अल्लाह तआला के हक में, आभिरत के मुताल्लिक और इसके अलावा गैब से मुताल्लिक, उन तमाम अकाईद पर ईमान रखना ज़रूरी है, जिनकी किताब व सुन्नत से ताईद होती है, वो मंददरजह जेल है :

(१) अल्लाह तआला पर ईमान :

अल्लाह तआला पर ईमान लाने का मतलब ये है के हम इस बात पर ईमान रखें के अल्लाह तआला के सिवा कोई मा'बूदे बरहकक और ईबादत का मुस्तल्लिक नहीं; इसलिये के अल्लाह बंदों का षालिक, उनका मुहसिन, उनका रज़ाक, उनके ज़हिर व बातिन से वाफ़िक और अपने इरमाबरदारों को ज़ाअे-भैर और नाइरमानों को सज़ा देने पर कादिर है. अल्लाह तआला ने जिनों और ईन्सानों को अपनी ईबादत के लिये पैदा इरमाया है और उनको इस पर कारबंद रहने का हुक्म दिया है. युनांये ईरशादे बारी-तआला है :

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ﴿١٦٣﴾ مَا أُرِيدُ مِنْهُمْ مِنْ رِزْقٍ
وَمَا أُرِيدُ أَنْ يُطْعَمُوا ﴿١٦٤﴾ إِنَّ اللَّهَ هُوَ الرَّزَّاقُ ذُو الْقُوَّةِ الْمَتِينُ ﴿١٦٥﴾

“मैंने जिनों और ईन्सानों को इसके सिवा किसी काम के लिये पैदा नहीं किया के वो मेरी बंदगी करें. मैं उनसे कोई रिज़क नहीं याहता ओर न मैं ये याहता हूँ के वो मुझे षिलाअें. अल्लाह तो षुद ही रज़ाक, बडी कुव्वतवाला और ज़बरदस्त है.” (सूर: अज़-अरियात, ५१:५६-५८)

ईरशादे बारी-तआला है :

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اعْبُدُوا رَبَّكُمُ الَّذِي خَلَقَكُمْ وَالَّذِينَ مِنْ قَبْلِكُمْ
لَعَلَّكُمْ تَتَّقُونَ ﴿١٦٦﴾ الَّذِي جَعَلَ لَكُمُ الْأَرْضَ فِرَاشًا وَالسَّمَاءَ بِنَاءً
وَأَنْزَلَ مِنَ السَّمَاءِ مَاءً فَأَخْرَجَ بِهِ مِنَ الثَّمَرَاتِ رِزْقًا لَكُمْ ۗ فَلَا
تَجْعَلُوا لِلَّهِ أُنْدَادًا وَأَنْتُمْ تَعْلَمُونَ ﴿١٦٧﴾

“अपने लोगो! अपने उस रब की बंदगी छुड़कार करो, जो तुम्हारा और तुमसे पहले लोगो का खालिक है, ताके तुम मुत्तकी बन जाव. वही तो है, जिसने तुम्हारे लिये जमीन का इर्श बिछाया, आसमान की छत बनाई, उपर से पानी बरसाया और उसके जरिये से हर तरफ की पैदावार निकालकर तुम्हें रिज्क बलम पहुंचाया. पस, जब तुम ये जानते हो, तो फिर दूसरो को अल्लाह का मदे-मुकाबिल ना ठहराव.” (सूर: अक़रह, २:२१-२२)

युनाये हक की वजाहत करने, उसकी दा'वत देने और उसकी मनाही थीजों से उराने के लिये अल्लाह तूआला ने अपने रसूल भेजे और किताबें नाज़िल इरमाई. जैसा के इरशादे बारी-तूआला है :

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَسُولًا أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ ۗ

“हमने हर उम्मत में अक रसूल भेज दिया और उसके जरिये से सबको खबरदार कर दिया है के अल्लाह की बंदगी करो ओर तागूत (की बंदगी)से बचो.” (सूर: नहल, १६:३६)

नीज इरमाया :

وَمَا أَرْسَلْنَا مِنْ قَبْلِكَ مِنْ رَسُولٍ إِلَّا نُوحِي إِلَيْهِ أَنَّهُ لَا إِلَهَ إِلَّا أَنَا فَاعْبُدُونِ ﴿٢٥﴾

“हमने तुमसे पहले जो भी रसूल भेजा है उसको यही वही भेज के मेरे सिवा कोई मा'बूद नहीं है, पस तुम मेरी ही बंदगी करो.”

(सूर: अंबिया, २१:२५)

इरमाने इलाही है :

الرَّبِّ كِتَابٌ أُحْكِمَتْ آيَاتُهُ ثُمَّ فُصِّلَتْ مِنْ لَدُنْ حَكِيمٍ خَبِيرٍ ﴿١﴾ إِلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا اللَّهَ ۗ إِنِّي لَكُمْ مِنْهُ نَذِيرٌ وَبَشِيرٌ ﴿٢﴾

“ये अक औसी किताब है के इसकी आयतें पुष्ता और मुफ़सल इरशाद हुई है अक दाना और बाखबर हस्ती की तरफ से, ये के तुम सिर्फ अल्लाह की

बंदगी करो, मैं उसकी तरफ से तुम को ખબરદાર करनेवाला और बशारत देनेवाला हूँ.” (सूर: हूद, ११:१-२)

ईस ईबादत की हकीकत ये है के उबूदियत की तमाम ईकसाम, जिनके जरिये से लोग ईबादत करते आ रहे हैं, मसलन् हूआ, ખौइ, उम्मीद, नमाज, रोजा, कुरबानी, नज़र वगैरह को कमाल मुहब्बत व आजिजी और ईन्किसारी और ખौइ व उम्मीद के जजबे के साथ अल्लाह के लिये ખास करी दिया जाये. कुरआन-मज्द का बेशतर डिस्सा ईसी बुनियादी अकीदे की वजाहत में नाज़िल हुआ है. मिसाल के तौर पर अल्लाह त्आला का ये इरमाने-मुबारक मुलाहिजा छी :

فَاعْبُدِ اللَّهَ مُخْلِصًا لَهُ الدِّينَ ۗ أَلَا لِلَّهِ الدِّينُ الْخَالِصُ ۗ

“लिहाजा तुम अल्लाह की बंदगी करो, दीन को उसी के लिये ખास करते हुओ. ખबरदार ! दीन ખालिस अल्लाह का हक है.” (सूर: जुमर, ३८:२-३)

और अल्लाह त्आला का ये ईरशाह :

وَقَضَىٰ رَبُّكَ أَلَّا تَعْبُدُوا إِلَّا آيَاتَهُ

“तेरे रब ने ईंसला कर दिया है के तुम उस (अल्लाह) के सिवा किसी की ईबादत ना करो.” (सूर: बनी ईसराईल, १७:२३)

और ये आयते-करीमा :

فَادْعُوا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ وَلَوْ كَرِهَ الْكَافِرُونَ ۝

“अल्लाह ही को पुकारो, अपने दीन को उसके लिये ખालिस करके, ख्वाह तुम्हारा ये इअल काइरों को कितना ही नागवार छे.” (सूर: मु'मिन, ४०:१४)

हजरत मआज عليه السلام से मरवी है के नबी करीम ﷺ ने इरमाया :

“अल्लाह त्आला का बंदो पर ये हक है के वो सिई उसीकी ईबादत करें और उसके साथ किसीको शरीक ना ठहराओं.” (मुत्तईक अलयहि)

नीज ईमान-बिल्वाह में ये दाखल है के अल्लाह त्आला ने अपने बंदों

पर जो कुछ वाजिब और इर्ज करार दिया है, यानी इस्लाम के पांच ञाहिर अरकान, उन पर भी इमान लाया जाये. युनांये वो ये है :

कल्मअ-शहादत, यानी इस बात का इकरार के अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल है और नमाज काईम करना, जकात अदा करना, रमजान के रोजे रभना और साहजे इस्तिताअत के लिये बैतुल्लाह का हज करना. इनके अलावा दूसरे इराईज, जो शरीअते-मुतल्हहा में साबीत है, उन सब पर इमान लाना जरूरी है. इन सारे अरकान में सब से अहम ओर अजीम रुकून इस बात की गवाही देना है के अल्लाह के सिवा कोई मा'बूद नहीं और मुहम्मद ﷺ अल्लाह के रसूल है.

ﷻ (ला इलाह इल्लल्लाह) के इकरार का लाजमी तकाजा ये है के इबादत को सिर्फ अल्लाह त्आला के लिये भास कर दिया जाये और उसके अलावा किसी और की इबादत ना की जाये, और 'ला इलाह इल्लल्लाह' के यही माअ्नी है, क्यूं के इसका मतलब ही यही है के अल्लाह के सिवा कोई मा'बूदे भर-हकक नहीं, लिहाजा अल्लाह के सिवा जिसकी भी इबादत की जायेगी, ज्वाह वो इन्सान हो या इरिश्ता, जिन्न हो या कुछ और, बातिल करार पायेगा, क्यूं के मा'बूदे भर-हकक अस अल्लाह त्आला की जाते-पाक है, जैसा के अल्लाह त्आला का इरशादे-पाक है :

ذٰلِكَ بِاَنَّ اللّٰهَ هُوَ الْحَقُّ وَاَنَّ مَا يَدْعُوْنَ مِنْ دُوْنِهِ الْبٰطِلُ

“ये इस लिये के अल्लाह ही हकक है और अल्लाह को छोडकर जिन्हें ये पुकारते हैं, वो सब बातिल है.” (सूर: लुकमान, 39:30)

इससे पेहले ये बयान किया जा यूका है के अल्लाह त्आला ने जिन्नों और इन्सानों को अपनी इबादत के अजीम मकसद के लिये पैदा किया है और इसी के लिये अपने रसूल भेजे, और किताबें नाजिल की. लिहाजा भूभ गौर करके इस हकीकत को अख्ठी तरह समज लेना चाहिये, ताके वाजेह हो जाये के इस अहमतरीन असासे-दीन के बारे में आज किस तरह अक्सर मुसलमान इन्तेहाई भतरनाक हद तक जहालत का शिकार हो यूके हैं, यहां तक के इन्हों ने अल्लाह त्आला की इबादत में दूसरों को शरीक ठहरा लिया और उसके मभसूस हुकूक में गैरुल्लाह को शामिल कर लिया - इल्लाह अल-मुस्तआन !

હમારી ઈમાની સિફાત મેં સે એક સિફત યે ભી હૈ કે હમ અલ્લાહ ત્આલા કો ઈસ કાયનાત કા ખાલિક ઓર મુદબ્બિર સમજે, જૈસા કે વો હૈ ઓર અપને ઈલ્મ વ કુદરત કી બુનિયાદ પર જિસ તરહ ચાહતા હૈ ખૂદ સારે મુઆમલાત કા ઈન્તઝામ કરતા હૈ, દુનિયા વ આખિરત ઓર સારે જહાં કા માલિક હૈ, ઉસકે અલાવા કોઈ ખાલિક ઓર રબ નહીં, ઉસને અપને બંદોં કો દુનિયા વ આખિરત કી ઈસ્લાહ ઓર નિજાત વ કામરાની કી રાહ દિખાને કે લિયે અપને રસૂલ ભેજે ઓર કિતાબેં નાઝિલ કી. ઈન સારી બાતોં મેં અલ્લાહ કા કોઈ શરીક નહીં. અલ્લાહ ત્આલા કા ઈરશાદ હૈ :

اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ﴿٣٦﴾

“અલ્લાહ હર ચીઝ કા ખાલિક હૈ ઓર વહી હર ચીઝ પર નિગેહબાન હૈ.” (સૂર: ઝુમર, ૩૮:૬૨)

નીઝ અલ્લાહ ત્આલા ને ફરમાયા :

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ يُغْشِي اللَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهُ حَثِيثًا وَالشَّمْسَ وَالْقَمَرَ وَالنُّجُومَ مُسَخَّرَاتٍ بِأَمْرِهِ ۗ أَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْأَمْرُ ۗ تَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٣٧﴾

“દરહકીકત તુમહારા રબ અલ્લાહ હી હૈ, જિસને આસમાનોં ઓર ઝમીન કો છે દિનોં મેં બનાયા, ફિર અપને અર્શ પર મુસ્તવી હુઆ. વો રાત સે દિન કો ઈસ તરહ છિપા દેતા હૈ કે વો રાત ઈસ દિન કો જલ્દી સે આ લેતી હૈ. જિસને સૂરજ ઓર ચાંદ ઓર સિતારે પૈદા કિયે. સબ ઉસકે ફરમાન કે તાબેઅ હૈ. ખબરદાર રહો ! ઉસીકી ખલક હૈ ઓર ઉસીકા અમ્ર હૈ. બડા બાબરકત હૈ અલ્લાહ જો સારે જહાનોં કા માલિક વ પરવરદિગાર હૈ.” (સૂર: આ'રાફ, ૭:૫૪)

ઈમાન બિલ્લાહ કે મફહૂમ મેં યે ભી શામિલ હૈ કે અલ્લાહ ત્આલા કે તમામ અસ્માએ-હુસ્ના ઓર આ'લા સિફાત, જિનકા કુરઆને-પાક મેં ઝિક આયા હૈ, ઓર જો રસૂલે અમીન ﷺ સે સાબિત હૈ. ઉન સબ પર રદ્દોબદલ યા ઉનકી

कैफ़ियत का ता'य्युन या उनको किसी ओर थीज़ से मुशाबिह करार दिये बगैर
 ईमान लाया जाये. हम पर वाज़िब है के इन सिफ़ात पर उसी तरह ईमान
 लायें, जिस तरह ये बयान हुई है. ये सिफ़ात जिन अज़ीम और आ'ला मआनी
 पर दलावत करती है, उन पर ईमान लाया जाये. इस लिये के वो अल्लाह की
 सिफ़ात हैं. हम पर लाज़िम है के इन सिफ़ात से अल्लाह तूआला को मुत्तसिफ़
 समझें, जिस तरह वो उसकी ज़ाते-पाक के लिये मौज़ूँ और उसके शायाने-शान है
 और उसकी मज्लूक़ात की किसी सिफ़त से मुशाबा न हों, जैसा के अल्लाह तूआला
 का ईरशाद है :

لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ⑩

“कायनात की कोई चीज़ उसके मुशाबिह नहीं और वो सब कुछ सुननेवाला,
 देखनेवाला है.” (सूर: शूरा, ४२:११)

अेक ओर जगह है :

فَلَا تَضْرِبُوا لِلَّهِ الْأَمْثَالَ ۗ إِنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ وَأَنْتُمْ لَا تَعْلَمُونَ ⑪

“पस अल्लाह के लिये मिसालें न धड़ो, अल्लाह जानता है, तुम नहीं
 जानते.” (सूर: नहल, १६:७४)

रसूलुल्लाह ﷺ के सहाबा किराम رضي الله عنهم और दीने-उक़क की ईतबाअ में
 उनके नक़शे-कदम पर चलनेवाले ताबईन رضي الله عنهم का यही अकीदा रहा है, जैसा के
 ईमाम अबूल हसन अशूअरी رضي الله عنه ने अपनी किताब *المقالات عن أصحاب الحديث واهل السنة*
 (अल-मक़ालात अन अस्हाबुल हदीस व अहलुल सुन्नह' में बयान किया है.
 इनके अलावा दूसरे अहले-ईल्म उज़रात ने भी लिखा है. ईमाम औज़ार्थ رضي الله عنه
 इरमाते हैं के ईमाम ज़हरी और मकहूल رضي الله عنه से अल्लाह की सिफ़ात के मुताब्लिक
 आयात के बारे में दरयाफ़्त किया, तो उन्होंने कहा — “ईन आयात को, जिस
 तरह वो नाज़िब हुई है उसी तरह रहने दो.”

वलीद बिन मुस्लिम رضي الله عنه कहते हैं के ईमाम मालिक, ईमाम औज़ार्थ, लैष
 बिन सअद और सुफ़यान सौरी رضي الله عنه से अल्लाह तूआला की सिफ़ात के मुताब्लिक
 वारिद नुसूसे शरईयह के बारे में दरयाफ़्त किया गया, तो उन्होंने जवाब दिया

के उनकी कैफ़ियत जानने के बग़ैर इस तरह तस्लीम कर लो, जिस तरह ये वारिद
हुँ है.

ईमाम औज़ाई रह फ़रमाते हैं के, “आम और ताबईन की अेक बडी
तादाद कडा करती थी के अल्लाह त्आला अर्श पर है. नीज़ सिफ़ाते ईलाही के
मुताल्लिक वारिद अछादीस पर भी हम ईमान रभते थे.

जब ईमाम मालिक रह के शैख़ हज़रत रबीआ बिन अबू अब्दुर्हमान
रह से ‘ईस्तवा’ के मुताल्लिक पूछा गया, तो उन्हींने जवाब दिया के ‘ईस्तवा’
कोई गैरमा’रूफ़ चीज़ नहीं, मगर इसकी कैफ़ियत का ता’य्युन करना अक़ल की
दस्तरस से बाहर है. अलबत्ता अल्लाह त्आला की तरफ़ से ये अेक पैग़ाम है, जो
रसूल के लिये इसको अख़ी तरह पढ़ुंया देना वाजिब और हमारे लिये इसकी
तस्दीक करना लाज़िम है.

ईसी तरह जब ईमाम मालिक रह से इसके मुताल्लिक दरयाफ़्त किया
गया, तो उन्हींने फ़रमाया,

“ईस्तवा मा’लूम है, मगर उसकी कैफ़ियत मजहूल है. उस पर ईमान
लाना वाजिब है और उसके मुताल्लिक सवाल करना बिदअत है.”

फ़िर आपने साईल को मुजातिब करते हुवे फ़रमाया, “मेरा जयाल है के
तुम शरपसंद आदमी हो.” ये कहते हुवे उसे मजलिस से निकलवा दिया. ईसी
तरह की बात उम्मुल मु’मिनीन हज़रत उम्मे सलमा रह से भी मरवी है.

ईमाम अबू अब्दुर्हमान अब्दुल्लाह बिन मुबारक रह ने फ़रमाया,
“हम अपने रब को उस हैसियत से जानते है के वो अपनी मजलूक से जुदा
आसमानों के उपर अर्श पर है.” ईस सिलसिले में अईम्मअे किराम के बकसरत
अक़वाल मौजूद है, जिनका यहाँ ईलाता करना मुमकिन नहीं है. जो ईस मस्ले में
ज़्यादा मा’लूमात याहता हो उसे याहिये के ईस मौजूअ पर उल्माअे सुन्नत की
तसानीफ़ का मुतालिआ करे. मसलन्, अब्दुल्लाह बिन अल-ईमाम अहमद बिन
हम्बल की किताब ‘अस्सुन्नह’ और ईमाम जलील मुहम्मद बिन जुज़ैमा की किताब
‘अत्-तौहीद’, ईमाम अबूल कासिम अल-लालकाई अल-तभरी की तस्नीफ़
‘अस्सुन्नह’, नीज़ ईमाम अबू बक़ बिन अबू आसिम की किताब ‘अल-सुन्नह’
और ईमाम ईब्ने तैमियह का वो जवाब जो उन्हींने अहले-हुमा के लिये तहरीर

क्रिया था. ये निहायत वकीअ और बेहद मुझीद है. इसमें ईमाम عليه السلام ने अहले सुन्नत के अकीदे को बहुत वजाहत के साथ बयान किया है और अहम्मअे अहले सुन्नत के अकवाल कसरत से नकल किये हैं, और बहुत ज़्यादा शरई और अकली दलायल के जरिये अहले सुन्नत के अकीदे की हकानियत को साबित किया है और मुખालिफ़ीन के अकवाल का बातिल होना वाज़ेह किया है.

ईसी तरह उनका 'तदमिरियल' नामी रिसाला, जिसमें उन्होंने कदरे तहसील से अहले सुन्नत के अकीदे को शरई और अकली दलायल से मुजय्यन किया है और मुખालिफ़ीन की इस तरह तरदीद की है के कोई भी साहबे-ईल्म जो नेक ईरादा और तलबे-हक के जज़बे से इस किताब को पढेगा, उसके सामने हक वाज़ेह और बातिल पस्या और सरनिंगू (सर के बल ओंधा) हो जायेगा. हर वो शप्स, जो अस्माअ व सिफ़ात के बारे में अहले सुन्नत के अकीदे की मुખालिफ़त करेगा, लाज़मी तौर पर वो नकली और अकली दलायल की भी मुખालिफ़त करेगा, और उसके साथ-साथ जिन बातों का वो अस्बात करेगा और जिनकी नफ़ी करेगा, उनमें वाज़ेह तनाकुज़ का शिकार होगा.

अहले सुन्नत ने तशूबियल व तम्सील के बग़ैर और अल्लाह की जात को मज़हूब के मुशाबिल होने से मुनज़्ज़ह करार देते हुवे, अल्लाह त्आला की सिफ़ाते लामहदूद को उसकी किताब और सुन्नते रसूलुल्लाह ﷺ से साबितशुदा उमूर के मुताबिक तस्लीम किया है. अहले सुन्नत के अकाईद से अल्लाह त्आला की जात में ना तो तअतुल वाकेअ होता है और ना वो इस बारे में किसी तनाकुज़ का शिकार होते हैं. यही वज़ह है के वो तमाम शरई दलायल पर अमल करने में कामियाब हुअे. इन लोगों के बारे में अल्लाह त्आला की यही सुन्नत है, जो अंबियाअे किराम عليهم السلام के लाये हुवे हक को मज़बूती से पकडे रहते हैं और इस राह में अपनी सारी कोशिश सर्फ़ करते हैं और इसकी तलब में अल्लाह त्आला के लिये वो मुख़लिस हो जाते हैं. अल्लाह त्आला ईन्हें हक की तौफ़ीक़ देता है और इसके दलायल को ईनके सामने बिलकुल वाज़ेह कर देता है, जैसा के अल्लाह त्आला का ईरशाद है :

بَلْ نَقْذِفُ بِالْحَقِّ عَلَى الْبَاطِلِ فَيَدْمَغُهُ فَإِذَا هُوَ زَاهِقٌ ط

“मगर हम तो बातिल पर हक की चोट लगाते हैं, जो उसका सर तोड़ देती है और वो दबते ही दबते मिट जाता है.” (सूर: अंबिया, २१:१८)

और फ़रमाया :

وَلَا يَأْتُونَكَ بِمَثَلٍ إِلَّا جِئْنَاكَ بِالْحَقِّ وَأَحْسَنَ تَفْسِيرًا ۗ

“जब कभी वो तुम्हारे सामने कोई निराली बात (अजब सवाल) लायेंगे, हम उसका ठीक जवाब और बेहतरीन तौजियह आपको बता देंगे.”

(सूर: कुरकान, २५:३३)

हाकिम एब्ने कसीर رحمته الله ने इस आयते करीमा :

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ اسْتَوَىٰ عَلَى الْعَرْشِ ۗ

“दरहकीकत तुम्हारा रब ही है, जिसने आसमानों और जमीन को छे दिनो में पैदा किया. फिर अर्श पर मुस्तवी हुवा.” (सूर: आ'राफ़, ७:५४)

की तफ़सीर में इस मस्ले पर बड़ी अख़री बात लिखी है. उसके जबरदस्त फ़ायदे के पेशेनज़र इसे यहां बयान करना मुनासिब समझता हूं. एमाम رحمته الله ने फ़रमाया :

“इस मस्ले में उल्मा के बहुत से अकवाल है. इस जगह उनकी तफ़सील बयान नहीं की जा सकती. बहरहाल हम तो इस मस्ले में सलफ़े-सालेह की राह पर चलेंगे. मसलन्, एमाम मालिक, एमाम औज़ाई, एमाम सौरी, एमाम इस्हाक बिन राहवियह और उनके अलावा दूसरे अहम्मअे इस्लाम رحمته الله, जिनकी एमामत व जलालत पेहले की तरह आज भी मुसल्लम है. उनका मज़हब ये है के इन सिफ़ात को तशूबियह व तअ्तील और कैफ़ियत की ता'य्युन के बगैर इसी तरह तस्लीम किया जाये, जिस तरह के वो वारिद हुए है.”

अल्लाह त्आला की मज्लूक में कोई शै उसके मुशाबिह नहीं है और फिरका मुशूबहीन ने अल्लाह त्आला की ज़ात में मुतशाबा सिफ़ात के साथ शुक्क व शुब्हात का एजहार किया है, जब के

لَيْسَ كَمِثْلِهِ شَيْءٌ ۚ وَهُوَ السَّمِيعُ الْبَصِيرُ ⑩

“कायनात की कोई चीज़ उसके मुशाबिह नहीं. वो सब कुछ जाननेवाला और देखनेवाला है.” (सूर: शूरा, ४२:११)

इकीकत तो ये है, जैसा के बाज़ अहम्मअे इस्लाम, मसलन् इमाम बुजारी रह के शैख नहम बिन हम्माद अल-भुजाई रह ने इरमाया :

“जिसने अल्लाह त्आला को उसकी मज्लूक से तशूबिहा दी और जिसने उन सिफ़ात का इन्कार किया, जिनसे अल्लाह त्आलाने अपने आपको मुत्तसिफ़ करार दिया है वो काफ़िर है.”

जिन सिफ़ात से अल्लाह त्आला ने अपने आपको या रसूलुल्लाह ﷺ ने उसको मुत्तसिफ़ करार दिया, इसमें तशूबिया नहीं है. पस जिसने आयाते सरीहा और अहादीसे सहीहा में जो कुछ अल्लाह त्आला के मुताव्विक वारिद हुवा है, उसको अल्लाह जल्दे शा-नहु के शायाने-शान तस्वीम कर लिया, और तमाम नकाईश से अल्लाह त्आला की जात को मुनज़ज़ा करार दिया, बिला-शुबा उसने हिदायत पा ली.

(२) इरिशतों पर इमान :

रहा इरिशतों पर इमान, तो इसकी दो सूरतें हैं : अेक तो उन पर इजमाली इमान और दूसरा तफ़सीली. अेक मुसलमान इजमाली तौर पर इस बात पर इमान रभे के अल्लाह त्आला के इरिशते हैं, जिन्हें उसने अपनी इताअत व इरमाअरदारी के लिये पैदा इरमाया है. अल्लाह त्आला ने उनका वस्फ़ अताया है के वो अरगूज़ीदा अंदे हैं और किसी बात में अल्लाह त्आला के हुकम से सरताबी नहीं करते, अल्के अंमेशा अल्लाह के ताअेअ-इरमान रहते हैं :

يَعْلَمُ مَا بَيْنَ أَيْدِيهِمْ وَمَا خَلْفَهُمْ وَلَا يُشْفَعُونَ ۗ إِلَّا لِمَنْ أَرَادَ

وَهُمْ مِنْ خَشْيَتِهِ مُشْفِقُونَ ⑪

“जो कुछ उनके सामने हैं, वो उसे भी जानता है और जो कुछ उनसे ओज़ल है, उससे भी बाअबर है. वो किसीकी सिफ़ारिश नहीं करते, सिवा उसके

जिसके हक में सिफारिश सुनने पर अब्बाह राजी हो और वो उसके भौंसे उरते रहते हैं.” (सूर: अंबिया, २१:२८)

उनके मुझलिक दरजात है. कुछ तो वो है जो अर्श-ईलाही को उठाये हुवे हैं और कुछ वो है जो जन्नत व जलन्नम की निगरानी पर मामूर है और कुछ बंदों के आ'माल का रीकोर्ड तय्यार करने में मशरूफ है.

और, इन इरिश्तों पर तइसीली ईमान रખते हैं, जिन का अब्बाह ने या उसके रसूल ﷺ ने नाम के साथ जिक्र किया है; जैसे जिब्रईल, मीकाईल, मालिक यानी दारोगाये जलन्नम, ईसराहील जो नइफ-सूर के लिये मामूर है. इनका अडादीसे सहीदा में जिक्र आया है. उजरत आईशा ؓ से मरवी है के नबी करीम ﷺ ने इरमाया :

“इरिश्ते नूर से पैदा किये गये है, जिन आग की लौ से और आदम जिस थीऊ से पैदा किया गया है उसका तुम्हें पता है.” (सहीह मुस्लिम)

(३) किताबों पर ईमान :

ईसी तरह ईमान बिल-किताब के बारे में ईजमाली तौर पर ये ईमान रખना सुइरी है के हक की ता'लीम देने और उसकी दा'वत व तबलीग के लिये अब्बाह त्आला ने अपने अंबिया व रसूलों पर किताबें नाजिल की है, जैसा के उसका ईरशाह है :

لَقَدْ أَرْسَلْنَا رُسُلَنَا بِالْبَيِّنَاتِ وَأَنْزَلْنَا مَعَهُمُ الْكِتَابَ وَالْمِيزَانَ
لِيَقُومَ النَّاسُ بِالْقِسْطِ ؕ

“हमने अपने रसूलों को साइ-साइ निशानीयों और छिदायात के साथ भेजा और उनके साथ किताब और मीज़ान उतारी, ताके लोग ईन्साइ पर काईम रहें.” (सूर: उदीद, ५७:२५)

और अब्बाह त्आला ने मजीद इरमाया :

كَانَ النَّاسُ أُمَّةً وَاحِدَةً سَفَعَتْ اللَّهُ النَّبِيَّ مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ
وَأَنْزَلَ مَعَهُمُ الْكِتَابَ بِالْحَقِّ لِيَحْكُمَ بَيْنَ النَّاسِ فِي مَا اخْتَلَفُوا فِيهِ ؕ

“‘ईतदा में सब लोग अक ही तरीके पर थे (इर ये डालत ढाकी ना रडी और ईश्ललाह इनुमा डुवे), तब अल्लाह त्आला ने नबी भेजे, जो रास्तरवी पर बशारत देनेवाले और कजरवी के नताईज से डरानेवाले थे, और उनके साथ क़िताब भर-डक नाज़िल की, ताके डक के बारे में लोगों के दरमियान जो ईश्ललाहात इनुमा डो गये है, उनका ईसला करे.” (सूर: अकरड, २:२१३)

और, डम ईन क़िताबों पर मुहससल ईमान रभते हैं, जिनका अल्लाह त्आला ने नाम के साथ जिक़ किया है. मसलन्, तौरात, ईंजल, ज़भूर और कुरआन-मज्द. ईनमें से कुरआन सबसे अइजल और आभरी क़िताब है. वो ईन तमाम साबिक क़िताबों पर निगरां और उनकी तस्दीक करनेवाली है. उसकी ईत्तेबा करना तमाम उम्मत पर इर्ज़ है. कुरआने-पाक और उसके साथ-साथ रसूलुल्लाह ﷺ से साबितशुदा अडादीसे सहीडा के मुताबिक ईसला करना वाजिब है, ईस लिये के अल्लाह त्आला ने डजरत मुहम्मद ﷺ को तमाम जिन और ईन्सानों की तरफ़ अपना रसूल बनाकर भेजा है और आप पर ये कुरआने-पाक नाज़िल किया है, ताके वो लोगों के दरमियान ईसल और डुकमरान बने. अल्लाह त्आला ने कुरआन-मज्द को दिलों के लिये बाअसे-शिफ़ा, डर मुआमले का अकडल-कुशा और अडले ईमान के लिये सरापा डिदायात व रडमत बनाकर नाज़िल किया है. अल्लाह त्आला का ईरशादे-पाक है :

وَهَذَا كِتَابٌ أَنْزَلْنَاهُ مُبْرَكٌ فَاتَّبِعُوهُ وَاتَّقُوا لَعَلَّكُمْ تُرْحَمُونَ ﴿٥٥﴾

“और ईस तरड डमने ये क़िताब नाज़िल की है अक बरकतवाली क़िताब, पस तुम ईसकी पैरवी करो और तकवा की रविश ईश्रियार करो, बईद नहीं के तुम पर रडम किया जाअे.” (सूर: अनूआम, ६:१५५)

और इरमाया :

وَنَزَّلْنَا عَلَيْكَ الْكِتَابَ تَبْيَانًا لِّكُلِّ شَيْءٍ وَهُدًى وَرَحْمَةً وَبُشْرَى
لِّلْمُسْلِمِينَ ﴿٨٩﴾

“डमने ये क़िताब तुम पर नाज़िल की है, जो डर यीज़ की साइ-साइ

वज्राहत करनेवाली है और मुसलमानों के लिये हिदायत व रहमत और बशारत है.” (सूर: नहल, १६:८८)

और मजीद इरमाया :

قُلْ يَا أَيُّهَا النَّاسُ إِنِّي رَسُولُ اللَّهِ إِلَيْكُمْ جَمِيعًا الَّذِي لَهُ مُلْكُ
السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضِ ۚ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ يُحْيِي وَيُمِيتُ ۚ فَأَمِنُوا بِاللَّهِ وَرَسُولِهِ
النَّبِيِّ الْأُمِّيِّ الَّذِي يُؤْمِنُ بِاللَّهِ وَكَلِمَاتِهِ وَاتَّبِعُوهُ لَعَلَّكُمْ تَهْتَدُونَ ﴿۱۹﴾

“आप इरमा दें के अय लोगों ! मैं तुम सब की तरफ़ उस अल्लाह का पयगंबर हूँ, जो जमीन और आसमानों का बादशाह है. उसके सिवा कोई मा'बूद नहीं, वही जिंदगी बक्षता है और वही मौत देता है. पस, ईमान लाओ अल्लाह पर, उसके भेजे हुवे नबी उम्मी पर, जो अल्लाह और उसके ईरशादात पर ईमान लाता है और पैरवी करो उसकी. उम्मीद है के तुम राहेरास्त पा लोगे.”

(सूर: आ'राफ़, ७:१५८)

(४) रसूलों पर ईमान :

ईसी तरह अंबिया पर भी मुजमल और मुफ़स्सल हर दो तरीके पर ईमान लाना जरूरी है. मुजमलन् ईमान ये है के अल्लाह तआला ने अपने बंदों को उराने और पुशखबरी देने और उनको हक की तरफ़ बुलाने के लिये अपने रसूल भेजे. पस जिसने उनकी दा'वत पर लब्बैक कहा, वो सआदतमंद और ईरशुल-मराम हुवा और जिसने उनकी मुखाविफ़त की, नाकामी व हसरत उसका मुकदर बनी. इन अंबिया عليهم السلام में सब से अफ़जल और आपरी नबी हजरत मुहम्मद ﷺ है, जैसा के अल्लाह तआला का ईरशाद है :

وَلَقَدْ بَعَثْنَا فِي كُلِّ أُمَّةٍ رَسُولًا أَنِ اعْبُدُوا اللَّهَ وَاجْتَنِبُوا الطَّاغُوتَ ۚ

“हमने हर उम्मत में अक रसूल भेजा के अल्लाह की ईबादत करो और तागूत (की बंदगी) से बचो.” (सूर: नहल, १६:३६)

मजीद इरमाया :

رُسُلًا مُبَشِّرِينَ وَمُنذِرِينَ لِئَلَّا يَكُونَ لِلنَّاسِ عَلَى اللَّهِ حُجَّةٌ بَعْدَ الرُّسُلِ ۗ

“ये सारे रसूल भुशभरि दनेवाले और उरानेवाले बनाकर भेजे गये थे, ताके उनको भभउिस कर दने के बाद लोगो के पास अल्लाह के मुकाबले में कोई हुज्जत ना रहे.” (सूर: निसा, ४:१६५)

भकीद ईरशाद इरमाया :

مَا كَانَ مُحَمَّدٌ أَبَا أَحَدٍ مِّن رِّجَالِكُمْ وَلَكِن رَّسُولَ اللَّهِ وَخَاتَمَ النَّبِيِّينَ ۗ

“मुहम्मद (ﷺ) तुम्हारे भर्दों में से किसी के बाप नहीं है, मगर वो अल्लाह के रसूल और भातमुन्-नबियिन है.” (सूर: अहजाब, ३३:४०)

ईन अंबिया और रसूलों में से अल्लाह त्आला ने जिनका जिक्र किया है या नबी ﷺ ने जिन का नाम बताया है, हम उन पर तइसील व ताय्युन के साथ ईमान लाते हैं; जैसे हजरत नूह, हजरत हूद, हजरत सालेह, हजरत ईब्राहीम और ईनके अलावा दूसरे अंबियाअे किराम ﷺ पर और हमारे नबी पर अइजलुस-सलात और पाकीजातर तस्वीम.

(५) आभिरत पर ईमान :

भौत के बाद पेश आनेवाले तमाम उमूरे-गैब, जिनकी अल्लाह और उसके रसूल ने भभर दी है, उन सब पर ईमान लाना ईमान बिल आभिरत में शामिल है; मसलन् कभ्र की आजमाईश और उसके अजाब व राहत, कियामत के रोज पेश आनेवाली शदीद होलनाकियां, पुल-सिरात, भीजान, हिसाब-किताब, जजा व सजा और लोगो के दरमियान नामअे-आ'माल की तक्सीम, कुछ लोग ईन्हें दाहने हाथ में लेंगे, कुछ बाअें हाथ में या फिर कुछ लोग पीठ के पीछे से लेंगे.

नीज हौजे-कौसर, जो रसूलुल्लाह ﷺ को कियामत के रोज अता होना है, ईस पर ईमान लाना और जन्नत व जहन्नम पर ईमान लाना भी ईमान बिल आभिरत में शामिल है. अहले ईमान को अपने रब जल्ले शानहू का दीदार होना और अल्लाह त्आला का उनके साथ भात करना और ईन सबके अलावा

कुरआने-करीम और रसूलुल्लाह ﷺ की अछादीसे सहीछा के जरिये से अहवाले कियामत के मुताबिक जो कुछ साबित है, उन पर ईमान लाना और उनकी तस्दीक करना जरूरी है, जिस तरह अल्लाह और उसके रसूल ﷺ ने उनके बारे में बताया है.

(६) कजा व कद्र पर ईमान :

कजा व कद्र पर ईमान रખना चार बातों को मुस्तलज़िम है.

पहली बात तो ये है के जो कुछ हो यूका है और जो कुछ होनेवाला है, अल्लाह को ईसका ईल्म है और ये के अल्लाह त्आला अपने बंदों के जुम्हा अहवाल को ખूब अच्छी तरह जानता है. उनके रिज़क, उनकी उमर और उनके सारे आ'माल और दूसरे तमाम उमूर का उसको मुकम्मल ईल्म है और उससे कोई चीज़ मफ़्ही नहीं है, जैसा के ईरशादे बारी त्आला है :

إِنَّ اللَّهَ بِكُلِّ شَيْءٍ عَلِيمٌ ﴿١١٥﴾

“हर हकीकत अल्लाह त्आला हर चीज़ का ईल्म रખता है.”

(सूर: तौबा, ८:११५)

और अल्लाह त्आला ने मज़ीद फ़रमाया :

لِتَعْلَمُوا أَنَّ اللَّهَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ قَدِيرٌ ۖ وَأَنَّ اللَّهَ قَدْ أَحَاطَ بِكُلِّ شَيْءٍ عِلْمًا ﴿١١٦﴾

“ताके तुम जान लो के अल्लाह हर चीज़ पर कुदरत रખता है और ये के अल्लाह का ईल्म हर चीज़ पर मुलीत है.” (सूर: तलाक, ६५:१२)

दूसरी चीज़ ये है के अल्लाह त्आला ने जो कुछ करने का ईसला किया है और जो कुछ मुक़दर फ़रमाया है, सबको नोश्तअ-तकदीर में लिख दिया है. अल्लाह त्आला का ईरशाद है :

قَدْ عَلِمْنَا مَا تَنْقُصُ الْأَرْضُ مِنْهُمْ ۖ وَعِنْدَنَا كِتَابٌ حَفِيظٌ ﴿١١٧﴾

“जमीन उन (के जिस्म)में से जो कुछ ખाती है, वो सब हमारे ईल्म में है और हमारे पास अेक किताब में सब कुछ मलफ़ूज़ है.” (सूर: कोफ़, ५०:४)

मज़ीद एरशाद है :

وَكُلَّ شَيْءٍ أَحْصَيْنَاهُ فِي إِمَامٍ مُّبِينٍ ﴿١٤﴾

“और हमने हर चीज़ को एक ખुली किताब में दर्ज़ कर रखा है.”

(सूर: या-सीन, 36:12)

और इरमाया :

أَلَمْ تَعْلَمْ أَنَّ اللَّهَ يَعْلَمُ مَا فِي السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۗ إِنَّ ذَلِكَ فِي كِتَابٍ ﴿٥٧﴾
إِنَّ ذَلِكَ عَلَى اللَّهِ يَسِيرٌ ﴿٥٨﴾

“क्या तुम नहीं जानते के आसमान व जमीन की हर चीज़ अल्लाह के एल्म में है ? सब कुछ एक किताब में दर्ज़ है. अल्लाह के लिये ये कुछ भी मुश्किल नहीं.” (सूर: 57, 22:70)

तीसरी चीज़ यह है के अल्लाह त्आला की मशियत बहरहाल नाफ़िज़ होकर रहती है. पस वही कुछ हुवा है जो अल्लाह ने याहा है और जो अल्लाह ने नहीं याहा, वो नहीं हुवा. अल्लाह त्आला का एरशाद है :

إِنَّ اللَّهَ يَفْعَلُ مَا يَشَاءُ ﴿٧٨﴾

“अल्लाह त्आला जो कुछ याहता है, करता है.” (सूर: 78, 22:78)

और इरमाया :

إِذَا مَرَّةً إِذَا أَرَادَ شَيْئًا أَنْ يَقُولَ لَهُ كُنْ فَيَكُونُ ﴿٨٠﴾

“वो तो जब किसी चीज़ का एरशाद करता है तो उसका काम बस यह है के उसे हुकम दे के हो जा, और वो हो जाती है.” (सूर: या-सीन, 36:82)

और मज़ीद एरशाद है :

وَمَا تَشَاءُونَ إِلَّا أَنْ يَشَاءَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٢٠﴾

“और तुम्हारे याहने से कुछ नहीं होता, जब तक के अल्लाह रब्बुल आलमीन ना याहे.” (सूर: तकवीर, 29:20)

योथी बात यह है के अल्लाह त्आला ने तमाम मौजूदात को वजूद बक्षा है. इसके इलावा कोई ખાલિક और परवरदिगार नहीं है, जैसा के ईरशाह है :

اللَّهُ خَالِقُ كُلِّ شَيْءٍ وَهُوَ عَلَىٰ كُلِّ شَيْءٍ وَكِيلٌ ﴿٣٦﴾

“अल्लाह हर चीज का ખાલिक है और वही हर चीज का निगेहबान है.” (सूर: जुमर, ३८:६२)

और इरमाया :

يَا أَيُّهَا النَّاسُ اذْكُرُوا لِلَّهِ عَلَيْكُمْ ۖ هَلْ مِنْ خَالِقٍ غَيْرُ اللَّهِ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ ۖ لَا إِلَهَ إِلَّا هُوَ ۚ فَآلَىٰ تُوَفَّكُونَ ﴿٣٧﴾

“लोगों ! तुम पर अल्लाह के जो अहसानात है, उन्हें याद रओ. क्या अल्लाह के सिवा कोई ओर खालिक भी है, जो तुम्हें आसमान और जमीन से रिज़ूक देता हो ? कोई मा'बूद उसके सिवा नहीं. आभिर कहां तुम उलटे जाते हो.” (सूर: फ़ातिर, ३५:३)

पस, अहले बिद्अत के भरअक्स, अहले सुन्नत के नजदीक इमान बिल-कदर इन चारों बातों पर मुश्तमिल है, जो इनमें से बाज उमूर का इन्कार करते हैं.

इमान बिल्लाह के सिलसिले में यह बात वाजेह रहनी चाहिये के इमान कौल और अमल के मजमूअे का नाम है, जो इताअत व इरमाबरदारी से बढता और गुनाह व मआसियत से घटता है और यह के कुफ़ व शिर्क के इलावा किसी गुनाह की वजह से किसी मुसलमान की तक़ीर जाईज नहीं है. मसलन्, जिना, योरी, सूदभोरी, शराबनोशी, नशाबाजी, वालदैन की नाइरमानी और इनके इलावा दूसरे कबीरा गुनाह जब तक के वो इसको हलाल ना समज ले. इस लिये के अल्लाह त्आला ने इरमाया :

إِنَّ اللَّهَ لَا يَغْفِرُ أَنْ يُشْرَكَ بِهِ وَيَغْفِرُ مَا دُونَ ذَلِكَ لِمَنْ يَشَاءُ ۗ

“अल्लाह अस शिर्क ही को माइ नहीं करता, इसके मा-सिवा दूसरे जिस कदर गुनाह है, वो जिसके लिये चाहता है, माइ कर देता है.” (सूर: निसा, ४:४८)

युनांये, अलादीसे मुतवातिर के जरिये से रसूलुल्लाह ﷺ से साबित है के अल्लाह तूआला हर उस शप्स को जहन्नम से निकाल देगा, जिसके दिल में राई के दाने के बराबर भी ईमान होगा.

ईमान बिल्लाह में यह बात भी दाखिल है के मलज अल्लाह के लिये मुहब्बत की जाये और उसी के लिये किसी से जुगज रखा जाये और दोस्ती व दुश्मनी सिर्फ उसीके लिये हो. अक सय्या मोमिन अहले ईमान को दोस्त रखता है. उनसे मुहब्बत करता है. कुर्फार से जुगज रखता है और उनसे दुश्मनी करता है. इस उम्मत के तमाम मोमिनो की सिफते-अव्वल ही में रसूलुल्लाह ﷺ के अस्हाबे-किराम رضي الله عنهم हैं. अहले सुन्नत उनसे मुहब्बत रखते हैं, उनको दिलसे याहते हैं और इस बात का अ'तिकाद रखते हैं के अंबिया के बाद वो बेहतरीन ईन्सान हैं. इस लिये के रसूलुल्लाह ﷺ ने इरमाया :

“तमाम जमानों में सब से बेहतर जमाना मेरा जमाना है. उसके बाद जो लोग होंगे, फिर उसके बाद जो लोग होंगे.” (मुत्तफिक अलयहि)

नीज, अहले सुन्नत इस बात का भी अ'तिकाद रखते हैं के सहाबा किराम رضي الله عنهم में सब से अइजल हजरत अबू बक सिदीक, फिर हजरत उमर फारुक, फिर हजरत उस्मान जूनूरैन, फिर हजरत अली मुरतजा और उनके बाद बकिया अशूरह-मुबशशरा رضي الله عنهم हैं. इनके दरमियान आपस में जो ईप्पिलाफात इनुमा हुवे, उनके बारे में अहले सुन्नत ने सुकूत ईप्पियार करने का मोकिइ अपनाया है. उनका ખयाल है के उन्होंने ईजूतिहाद से काम लिया था. लिहाजा जिनका ईजूतिहाद सहीह था उनको दोहरा अज और जिनका ईजूतिहाद सहीह ना था उनको अक अज मिलेगा.

ईसी तरह अहले सुन्नत अहले बैत से मुहब्बत रखते और उनसे ईन्तिहाई अपनाईय्यत और उन्स मलसूस करते हैं. उनके दिल में तमाम अजवाजे मुतह्हरात رضي الله عنهم से भी ता'जीम और अहतिराम का जजबा है. वो उनको तमाम अहले ईमान की माअें समजते हैं और उन सब के लिये अल्लाह से रजा तलबी की दुआअें करते हैं.

रवाइज, जो अस्हाबे रसूल رضي الله عنهم से जुगज रखते हैं, उनको गालियां देते और अहले बैत की मुहब्बत में गुलू से काम लेते हैं और उनको अल्लाह तूआला

ने जो मकाम बक्षा है वो उन्हें उससे ज्यादा दरजा देते हैं और उसी तरह नवासिब, जो किसी कौल या अमल से अहले बैत को तकलीफ़ पहुंचाते हैं, अहले सुन्नत उन सब से बेजारी का इजहार करते हैं.

ईस मुहससरी सी तकरीर में हमने जो कुछ बयान किया है, वही सही इस्लामी अकीदा है, जिसके साथ अल्लाह त्आला ने अपने रसूल हजरत मुहम्मद ﷺ को भेजा है. यही फिरका नाजिया यानी अहले सुन्नत का अकीदा है, जिसके बारे में नबी करीम ﷺ ने ईरशाद फ़रमाया है :

“मेरी उम्मत में बराबर एक गिरोह हक पर काईम रहेगा, जिसको अल्लाह की ताईद हासिल होगी. लोग उनका साथ छोड़कर उनको कोई नुकसान नहीं पहुंचा सकेंगे, यहां तक के अल्लाह का हुकूम आ पहुंचे.”

(मुस्नद अहमद, ५/४३६)

आपने मजीद फ़रमाया :

“यहूद ईकलतार (७१) फिरकों में तकसीम हुअे और नसारा बलतार (७२) फिरकों में बट गये और यह उम्मत तिहत्तार (७३) फिरकों में मुन्कसिम हो जायेगी. सबके सब दोऊभी होंगे, सिवा एक के.” सहाबाने अर्ज किया, “वो कौन सा फिरका होगा, अय अल्लाह के रसूल ? ” आपने फ़रमाया, “जो मेरे और मेरे सहाबा के तरीके पर होगा.” (सुनन अबी दाउद, किताबुस्सुन्नल)

यही वो अकीदा है, जिस पर हमेशा मजबूती से काईम रहना और उसकी भिलाइवर्जी से डरते रहना चाहिये.

जो लोग ईस अकीदअे सहीदा से मुन्डरिफ़ हैं और दूसरी राह पर गामज़न हैं, उनकी भी बहुत सी किस्मे हैं. उनमें से कुछ तो बूतों, मूर्तियों, इरिशतों, वलीयों, जिनों, दरभों और पत्थरों वगैरह की परस्तिश करते हैं. उन्होंने अंबिया व रसूलों की दा'वत को सिरे से कुबूल ही नहीं किया, बल्के उसकी मुखालिफ़त की और उसके मुताव्लिक हरीफ़ाना मोकिफ़ इफ़्तियार किया, जिस तरह कुरैश और अरबों के मुफ़लिफ़ गिरोहों का हमारे नबी हजरत मुहम्मद ﷺ की दा'वते हक के साथ रवैया रहा. वो अपनी हाजतरवाई की हुआ अपने मा'बूदाने बातिल से करते थे. मरीजों को शिफ़ा बक्षने और दुश्मनों पर गल्बा अता करने की भी

दुआओं उनसे करते थे. उनके लिये कुरबानीयां और नजरानें पेश करते थे. लेकिन जब रसूलुल्लाह ﷺ ने उनको इससे रोका और एबादत को सिर्फ अल्लाह त्आला के लिये पास कर देने का हुक्म दिया, तो उनको यह बात अजब सी लगी और उन्होंने ने कहा :

أَجْعَلُ الْإِلَهَةَ إِلَهًا وَاحِدًا ۖ إِنَّ هَذَا لَشَيْءٌ عَجَابٌ ۖ

“क्या इसने सारे मा'बूदों की जगह बस एक ही मा'बूद बना डाला ? यह तो बड़ी अजब बात है.” (सूर: सोद, ३८:५)

लेकिन रसूलुल्लाह ﷺ बराबर उनको अल्लाह की तरफ बुलाते और शिर्क से डराते रहे और अपनी दा'वत की हकीकत उनके सामने बयान करते रहे, यहां तक के अल्लाह त्आला ने उनमें से जिन को चाहा, छिदायत बक्षी. फिर आभिरकार वह झौंझ दर झौंझ अल्लाह त्आला के दीन में दाखिल हो गये और रसूलुल्लाह ﷺ और आप के सलाबा किराम और ताबईन की मुसलसल दा'वत व तब्लीग और तवील जिहाद के बाद अल्लाह त्आला का दीन सारे अदयान पर गालिब आ गया. फिर लालात ने पलटा भाया और अक्सर लोगों पर जिहालत गालिब आ गई, यहां तक के अक्सर लोग दीने जाहिलियत की तरफ लौट गये. अंबिया और अवलिया के अहतिराम व ता'जीम में गुलू करने ओर उनसे दुआओं करने ओर मदद तलब करने लगे. वो इन जैसे बहुत से दूसरे मुश्रिकाना उमूर में मुज्तिहा हो गये. उन्होंने 'ला-एलाह इल्लल्लाह' के मतलब को इरामोश कर दिया और इसको उस तरह नहीं समजा जैसे के कुर्फारे अरब ने समजा था - वल्लाहुल मुस्तआन.

यह शिर्क बराबर लोगों में फैलता रहा और आज तक फैल रहा है. इसका सबब जिहालत का गल्बा और अहदे नुबूवत से दूरी है.

आज के मुश्रिकीन को भी वही शुभा लाहक है, जो जमानाअे जिहालत के मुश्रिकीन का था. वो कहा करते थे ये (मा'बूदाने बातिल) तो अल्लाह के नजदीक हमारे सिफारिशी हैं. कुरआनने उनका कौल नकल किया है :

مَا نَعْبُدُهُمْ إِلَّا لِيُقَرِّبُونَا إِلَى اللَّهِ زُلْفَىٰ

“હમ તો ઉનકી ઈબાદત સિફ ઈસ લિયે કરતે હૈં કે વે અલ્લાહ તક હમારી રિસાઈ કરા દૈં.” (સૂર: ઝુમર, ૩૯:૩)

અલ્લાહ ત્આલા ને ઉનકા શુબા રદ કરતે હુવે ફરમાયા કે જિસને અલ્લાહ કે સિવા કિસી ઓર કી ઈબાદત કી, ખ્વાહ વો કોઈ હો, તો વો મુશ્રિક ઓર કાફિર હૈ. અલ્લાહ કા ઈરશાદ હૈ :

وَيَعْبُدُونَ مِنْ دُونِ اللَّهِ مَا لَا يَنْفَعُهُمْ وَلَا يَنْفَعُهُمْ وَيَقُولُونَ هَؤُلَاءِ
شُفَعَاؤُنَا عِنْدَ اللَّهِ ۗ

“યે લોગ અલ્લાહ કે સિવા ઉનકી પરસ્તિશ કર રહે હૈં, જો ઉનકો નુકસાન પહુંચા સકતે હૈં ના નફા, ઓર કહતે હૈં કે યે અલ્લાહ કે પાસ હમારે સિફારિશી હૈ.” (સૂર: યૂનુસ, ૧૦:૧૮)

ઈસકા રદ કરતે હુવે અલ્લાહ ત્આલા ને ફરમાયા :

قُلْ أَتَنْبِئُونَ اللَّهَ بِمَا لَا يَعْلَمُ فِي السَّمَوَاتِ وَلَا فِي الْأَرْضِ ۗ سُبْحٰنَهُ
وَتَعَلٰى عَمَّا يُشْرِكُونَ ﴿١٨﴾

“અય નબી ! ઈનસે કહો, ક્યા તુમ અલ્લાહ કો ઉસ બાત કી ખબર દેતે હો, જિસે વહ આસમાન મેં જાનતા હૈ, ન ઝમીન મેં ? પાક હૈ વહ ઓર બાલાતર હૈ ઉસ શિર્ક સે જો યે લોગ કરતે હૈં.” (સૂર: યૂનુસ, ૧૦:૧૮)

ઈસ આયત મેં અલ્લાહ ત્આલા ને વાઝેહ તૌર પર બતા દિયા હૈ કે ઉસકે ઈલાવા અંબિયા, અવલિયા યા કિસી ઓર કી ઈબાદત ઐન શિર્કે અકબર હૈ, ખ્વાહ ઉસકા ઈર્તિકાબ કરનેવાલે ઉસકા કુછ ભી નામ રખ લેં. અલ્લાહ ત્આલા કા ઈરશાદ હૈ :

وَالَّذِينَ اتَّخَذُوا مِنْ دُونِهِ أَوْلِيَاءَ ۗ مَا نَعْبُدُهُمْ إِلَّا لِيُقَرِّبُونَا إِلَى اللَّهِ
زُلْفَىٰ ۗ

“रहे वो लोग, जिन्होंने उसके सिवा दूसरे सरपरस्त बना रभे हैं (और अपने झअल की ये तौजिहा करते हैं के) हम तो उनकी एबादत सिई ईस लिये करते हैं के वे अल्लाह तक हमारी रिसाई करा दें.”

(सूर: जुमर, 34:3)

अल्लाह तआला ने उनका रद करते हुवे इरमाया :

إِنَّ اللَّهَ يَحْكُمُ بَيْنَهُمْ فِي مَا هُمْ فِيهِ يَخْتَلِفُونَ ۗ إِنَّ اللَّهَ لَا يَهْدِي مَنْ هُوَ كَاذِبٌ كَفَّارٌ ﴿٣٤﴾

“अल्लाह तआला यकीनन उनके दरमियान उन तमाम बातों का ईसला इरमा देगा, जिसमें वे एखिलाफ कर रहे हैं. अल्लाह किसी ऐसे शअ्स को लिदायत नहीं देता, जो जूटा और मुन्किरे लक हो.” (सूर: जुमर, 34:3)

पस, अल्लाह तआला ने वाजेह इरमा दिया के गैरुल्लाह से हुआ और भौइ व उम्मीद के जरिये से उसकी एबादत करना अल्लाह से कुइ है. नीज, अल्लाह तआला ने उनके ईस जोअूम (गुमान) को जुठलाया के उनके मा'बूदाने बातिल उन्हें अल्लाह से करीब करनेवाले हैं.

असूरे हाजिर में मार्क्स व लेनिन और दूसरे दाईयाने एल्लाह व कुइ के मुलहिद व पैरोकार जिन अइकार व आरा को अपनाये हुवे हैं वल भी मुस्तलजिमे कुइ और अंभिया ﷺ के लाये हुवे सहीह अकीदे से मुतसादिम है, ज्वाल वो एनको ईशतराकियत या सोश्यलिजम या बाषिजम या किसी और नाम से याद करते हों. ईस लिये के एन मुलहिदों का बुनियादी अकीदा 'ला-एलाह वल हयातु मादह' है — यानि कोई मा'बूद नहीं, मादा ही जिंदगी है.

नीज, उनके बुनियादी अकाईद में जन्नत व दोजभ और तमाम अदयान का एन्कार शामिल है. जो भी उनकी किताबों और लिटरेचर का मुतालिआ करेगा और उनकी लकीकत का सुराग लगाने की कोशिश करेगा, उसको ईस बात का अशुी तरह यकीन हो जायेगा.

ઇસમેં કોઈ શક નહીં કે યે અકીદા તમામ આસમાની મઝાહિબ કે મનાફી હે
 ઓર ઉસકે માનનેવાલોં કો દુનિયા ઓર આખિરત મેં બદતરીન અંજામ કા સામના
 કરના હે.

બાઝ એહલે તસવ્વુફ ઓર બાતનિયત કા ઉનકે મઝહીમાએ અવલિયા
 કે મુતાલ્લિક યે અકીદા ભી સરાસર ખિલાફે હક હે કે વો તદબીરે કાયનાત ઓર
 દુનિયા કે ઈન્તઝામાત મેં અલ્લાહ ત્આલા કા હાથ બટાતે હે. વો અપને ઈન
 મા'બૂદોં કો અવતાર, અગવાષ (ફરિયાદ કો સુનનેવાલા), અકતાબ (વો વલી-
 અલ્લાહ જિસ પર દુનિયા કે ઈન્તઝામ ઓર નિગહબાની કા દારોમદાર હો)
 વગૈરહ ઓર દૂસરે ખુદસાખા નામોં સે યાદ કરતે હે. અલ્લાહ ત્આલા કી
 રબૂબિયત મેં યે બદતરીન શિર્ક હે ઓર હક તો યહ હે કે ઝમાના-જાહિલિય્યત
 કે અરબોં કે શિર્ક સે ભી ઈનકા શિર્ક બદતર હે. ઈસ લિયે કે વો સિર્ફ અલ્લાહ
 કી ઈબાદત મેં શિર્ક કરતે થે, ઉસકી રબૂબિયત મેં શિર્ક નહીં કરતે થે. ફિર ઉનકા
 શિર્ક ખુશહાલી કે ઝમાને તક મહદૂદ થા ઓર તંગી વ પરેશાની કે વક્ત વો
 ઈબાદત કો અલ્લાહ ત્આલા કે લિયે ખાલિસ કર લેતે થે, જૈસા કે ઉનકે મુતાલ્લિક
 અલ્લાહ ત્આલા કા ઈરશાદ હે :

فَإِذَا رَكِبُوا فِي الْفُلِكِ دَعَوْا اللَّهَ مُخْلِصِينَ لَهُ الدِّينَ ۚ فَلَمَّا نَجَّاهُمْ إِلَى
 الْبَرِّ إِذَا هُمْ يُشْرِكُونَ ﴿٥٠﴾

“જબ યે લોગ કશ્તી પર સવાર હોતે હે, તો અપને દીન કો અલ્લાહ કે
 લિયે ખાલિસ કરકે ઉસસે દુઆ માંગતે હે. ફિર જબ વો ઈન્હે બચાકર ખુશ્કી
 પર લે આતા હે, તો યકાયક યે શિર્ક કરને લગતે હે.”

(સૂર: અન્-કબૂત, ૨૮:૬૦)

જહાં તક અલ્લાહ ત્આલા કી રબૂબિયત કા તા'લ્લુક હે, તો વે ઈસકા
 એ'તિરાફ કરતે હે કે વે સિર્ફ અલ્લાહ ત્આલા કે લિયે મખ્સૂસ હે, જૈસા કે ઉનકે
 મુતાલ્લિક અલ્લાહ ત્આલા ને ફરમાયા :

وَلَيْن سَأَلْتَهُمْ مَنْ خَلَقَهُمْ لَيَقُولَنَّ اللَّهُ

“और अगर तुम उनसे पूछो के उन्हें किसने पैदा किया है? तो ये भूद कहेंगे के अल्लाह ने.” (सूर: जुहुरुफ़, ४३:८७)

और इरमाया :

قُلْ مَنْ يَرْزُقُكُمْ مِنَ السَّمَاءِ وَالْأَرْضِ أَمَّنْ يَمْلِكُ السَّمْعَ
وَالْأَبْصَارَ وَمَنْ يُخْرِجُ الْحَيَّ مِنَ الْمَيِّتِ وَيُخْرِجُ الْمَيِّتَ مِنَ الْحَيِّ
وَمَنْ يُدَبِّرُ الْأَمْرَ ۗ فَسَيَقُولُونَ اللَّهُ ۗ فَقُلْ أَفَلَا تَتَّقُونَ ﴿٣١﴾

“उनसे पूछो, तुमको आसमान और जमीन से कौन रिज़क देता है? ये समाप्त और बीनाई की कुव्वतें किस के इश्रियार में है? कौन बेजान में से जानदार और जानदार में से बेजान निकालता है? कौन इस नज़्मे आलम की तदबीर कर रहा है? वे जुड़र कहेंगे के अल्लाह, कछो - फिर तुम (हकीकत के खिलाफ़ चलने से) परहेज़ क्यूं नहीं करते?” (सूर: यूनुस, १०:३१)

इस माअ्नी की आयतें कसरत से वारिद हुई है.

आज के मुश्रिकीन ने साबेका मुश्रिकीन के मुकाबले में दो तरीकों से इजाफ़ा किया. अक तो बाज़ लोगों ने अल्लाह की रबूबियत में शिर्क किया है. दूसरे यह के लोग तंगी व भूशहाली हर हालत में शिर्क करते हैं; जैसा के हर वो शप्स यह बात जानता है, जिसको उनके साथ रहने और उनके हालात के बारे में ज़ांय-पडताल करने का मौका मिला हो. मिसर में हुसैन व बदवी की कब्र, उदन (यमनके अउन शहर) में अैदइस की कब्र, यमन में हादी की कब्र, शाम के इब्ने अरबी और इराक में अब्दुल कादिर जलानी की कब्र के इलावा दूसरी मशहूर कब्रों पर जो कुछ किया जाता है, उसको देखा जाये तो मालूम होगा के किस तरह अवाम उनके बारे में गुलू का शिकार हुई हैं और अल्लाह त्आला के बहुत से हुकूक में इन कब्रवालों को शरीक व सीहम बनाये हुवे हैं. बहुत कम लोग हैं जो अवाम को इन चीज़ों से रोकते हों और उनके सामने तौहीद की हकीकत बयान करते हों. वह तौहीद, जिसको लेकर रसूलुल्लाह ﷺ ओर आप से पेहले अंबिया ﷺ मअउस हुवे हैं - إِيَّاكَ وَآلِيكَ وَالْيَوْمَآءِ جَعُونَ (इन्ना विल्लाहि व-इन्ना इलय-हि राज्जिअिन).

હમ દુઆ કરતે હૈ કે અલ્લાહ ત્આલા ઉનકો સમઝ અતા કરે ઓર ઉનકે દરમિયાન દાઈયાને હક કી તા'દાદ મેં ઈઝાફા કરે ઓર મુસલમાનોં કે અરબાબે હલ વ અકદ ઓર ઉલ્મા કો ઈસ શીર્ક ઓર ઈસકે અસ્બાબ કે ઈઝાલે ઓર ઈસકે ખિલાફ જિદોજહદ કરને કી તૌફીક ઈનાયત ફરમાએં. બેશક અલ્લાહ ત્આલા બડા સુનનેવાલા નિહાયત કરીબ હૈ.

જહમિયા ઓર મો'તઝલા, જો અલ્લાહ કી સિફાત કા ઈન્કાર કરતે ઓર તમામ સિફાતે કમાલ સે અલ્લાહ ત્આલા કી ઝાત કો આરી ઓર મુઅત્તલ સમજતે હેં, ઉનકે હમ મસ્લક દૂસરે એહલે બિદઅત કે અકાઈદ ભી અસ્મા વ સિફાત કે મુતાલ્લિક સહીહ અકીદએ ઈસ્લામી સે મુતસાદિમ હેં, જિસકે નતીજે મેં અલ્લાહ કી ઝાતે-પાક કા મા'દૂમ (નાપૈદ) ઓર જમાદાત વ નામુમકિનાત કી કબીલ સે હોના લાઝિમ આતા હૈ. અલ્લાહ ત્આલા ઉનકે ઈસ નઝરિયે સે બલંદતર હૈ.

ઈસ તરહ વો લોગ ભી ઈસ ઝુમરે મેં શામિલ હૈ, જો બાઝ સિફાત કા ઈન્કાર કરતે હેં ઓર બાઝ કા ઈકરાર, જૈસે ઈશારઆ, જિસ બાત સે બચને કે લિયે ઈન્હોંને બાઝ સિફાત કી નફી ઓર ઉનકે દલાઈલ કી તાવીલ કી થી. દરઅસ્લ ઉનકી બાઝ દૂસરી સિફાત કા ઈકરાર કરને સે વહી બાત લાઝિમ આતી હૈ. ઈસ તરીકે સે ઈન્હોંને અક્લી ઓર નક્લી દલાઈલ કી મુખાલિફત કી ઓર વાઝેહ તનાકુઝ કા શિકાર હુવે, ખ્વાહ ઈન સિફાત સે અલ્લાહ ત્આલા કે કમાલ વ અઝમત કી દલીલ મુહય્યા હોતી હો.

એહલે સુન્નત વ અલ-જમાઅત ને અલ્લાહ ત્આલા કે હક મેં ઉન અશિયા કી હકીકત કો તસ્લીમ કિયા હૈ, જિનકો ખૂદ અલ્લાહ ને યા ઉસકે રસૂલ ﷺ બારી ત્આલા કે હક મેં સાબિત કિયા હૈ. ઈન્હોંને અલ્લાહ ત્આલા કો મખ્લૂક કે મુશાબિહ હોને સે મુનઝ્ઝા કરાર દિયા હૈ, જિસસે અલ્લાહ ત્આલા કી ઝાતે-પાક કે મોઅત્તલ હોને કા શાયબા તક નહીં પૈદા હોતા. ઈસ તરહ વો સારે દલાઈલ કો બઝએ કાર લાને મેં કામિયાબ હુવે ઓર ઈનમેં સે કિસીકી તાવીલ યા તહરીફ કી ઝુરૂરત મહસૂસ નહીં કી ઓર ઉસકે તનાકુઝ સે ભી, જિસકા દૂસરે લોગ શિકાર હુવે, મહફૂઝ રહે, જૈસા કે ઈસસે પેહલે યહ બાત ગુઝર ચૂકી હૈ. યહી રાહે નિજાત હૈ ઓર દુનિયા વ આખિરત કી સઆદત વ કામિયાબી ઈસી મેં મુજમર હૈ. યહી વહ

जादवे मुस्तकीम है, जिसको ईस उम्मत के सलफ़-सालिहीन और अईम्मअे दीन ने ईश्रियार किया. ईस उम्मत के आबिर में आनेवालों की ईस्लाह उसी थीज से मुमकिन है, जिससे ईस उम्मत के अगले लोगों की ईस्लाह हुई थी और वह हे किताब व सुन्नत का ईत्तिबाअ और जो कुछ ईसके बिलाफ़ हो उसका तर्क.



अल्लाह त्आला की ઇબાદત

और उसके दुश्मनों पर हुसूले गलबे के अस्बाब

सब से अहम तरीन चीज, जो हर मुकल्लिफ़ इन्सान पर वाजिब होती है और सब से बड़ा इर्ज़, जो उस पर आर्ध होता है, वह यह है के वो सिर्फ़ अल्लाह त्आला की इबादत करे, जो आसमानों, जमीन और अर्शे अजीम का रब है, जिसने अपनी किताब में इरमाया :

إِنَّ رَبَّكُمُ اللَّهُ الَّذِي خَلَقَ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ فِي سِتَّةِ أَيَّامٍ ثُمَّ
اسْتَوَى عَلَى الْعَرْشِ يُغْشَى اللَّيْلَ النَّهَارَ يَطْلُبُهُ حَثِيثًا
وَالشَّمْسُ وَالْقَمَرُ وَالنُّجُومُ مُسَخَّرَاتٌ بِأَمْرِهِ ۗ أَلَا لَهُ الْخَلْقُ وَالْأَمْرُ
تَبَارَكَ اللَّهُ رَبُّ الْعَالَمِينَ ﴿٥٣﴾

“हरइकीकत तुम्हारा रब अल्लाह ही है, जिसने आसमानों और जमीन को छे दिनों में बनाया, फिर अर्श पर मुस्तवी हुवा और रात से दिन को इस तरह छिपा देता है के वह रात इस दिन को जल्दी से आ लेती है, जिसने सूरज और चांद और सितारे पैदा किये. सब उसके इरमान के ताबेअ है. ખબરદાર रहો ! उसीकी ખલ્ક और उसीका अम्र है, बड़ा बा-बरकत है अल्लाह, जो सारे जहानों का मालिक व परवरदिगार है.” (सूर: आ'राफ़, ७:५४)

और अपनी किताब में दूसरी जगह इरमाया के उसने इन्सानों और जिनों को सिर्फ़ अपनी इबादत के लिये पैदा किया है. अल्लाह त्आला इरमाता है :

وَمَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَالْإِنْسَ إِلَّا لِيَعْبُدُونِ ﴿٥١﴾

“और मैंने पैदा नहीं किया जिन्नों और इन्सानों को, मगर इस लिये के वे मेरी इबादत करे.” (सूर: आरियात, ५१:५६)

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ દ્વારા પ્રકાશિત કેટલાક પુસ્તકો

સિસ્તુનની કિવમ
(સરલભાષ્ય અથવાથે વ સરલમ)

કુશ્ત્રીનાં ૧ અબુ વસીલ અહમદીન કુશ્ત્રીનાં
ખરે પાસી ૨ ઈન કસીમ કુશ્ત્રી
વીલા મોહમમદ ૩ મોહમમદ - ૨૧૧૪

ઈસ્લામ
ખાલિસ
કયા હૈ ?

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ
કોલ કુશ્ત્રી પાસે, ડોલ નગર, જુન - ૬૨૪
Mo. : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ

દુઆએં

ઈસ્લામ ૫ ઈ વ કુશ્ત્રીનાં

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ
કોલ કુશ્ત્રી પાસે, ડોલ નગર, જુન - ૬૨૪
Mo. : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

જિન, ખદુ, ઓર
ખિમારીઆ
દૂર કરનેકા ઈલાવ

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર
કોલ કુશ્ત્રી પાસે, ડોલ નગર, જુન - ૬૨૪ Mo. : 84017 86172
www.iickutch.blogspot.in

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ

અકાલ
ના
મસાઈલ

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ
કોલ કુશ્ત્રી પાસે, ડોલ નગર, જુન - ૬૨૪
Mo. : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

કલાકસાલી

દુઆ કે
મસાઈલ

મોવાના મુખમમદ ઉકાશવ ઈલામી

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ

નબી કી નમાઝ
(સરલભાષ્ય અર્થેથે વ સરલમ)

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ
કોલ કુશ્ત્રી પાસે, ડોલ નગર, જુન - ૬૨૪
Mo. : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

લા ઈલા હૈ ઈલલાહ

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર - કચ્છ
કોલ કુશ્ત્રી પાસે, ડોલ નગર, જુન - ૬૨૪
Mo. : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

નમાઝ જમાઅત કે
સાથ પઢના ફરકે હૈ

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ
કોલ કુશ્ત્રી પાસે, ડોલ નગર, જુન - ૬૨૪
Mo. : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

ખુશગવાર ઝિંદગી કે
ઈસ્લામી ઉસૂલ

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ
કોલ કુશ્ત્રી પાસે, ડોલ નગર, જુન - ૬૨૪
Mo. : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

પસીલા

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર
કોલ કુશ્ત્રી પાસે, ડોલ નગર, જુન - ૬૨૪
Mo. : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

મુખતસાર વકીલિ અલ્લામુલ બયાન
સૂર: બકરહ

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર - કચ્છ
કોલ કુશ્ત્રી પાસે, ડોલ નગર, જુન - ૬૨૪
Mo. : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

નેક ઓરહ

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર - કચ્છ
કોલ કુશ્ત્રી પાસે, ડોલ નગર, જુન - ૬૨૪
Mo. : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

ISLAM SPREADS PEACE, WE SPREAD ISLAM

તોહકા-એ-રમઝાન

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર
કોલ કુશ્ત્રી પાસે, ડોલ નગર, જુન - ૬૨૪
Mo. : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

અહમ
દીની અસ્લાક

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ
કોલ કુશ્ત્રી પાસે, ડોલ નગર, જુન - ૬૨૪
Mo. : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

મીનાકુશ્ત્રીનાં
અહીં
મોતમમદે રસુલ

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ
કોલ કુશ્ત્રી પાસે, ડોલ નગર, જુન - ૬૨૪
Mo. : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

મુસલમાન કા
અકીદા

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ
કોલ કુશ્ત્રી પાસે, ડોલ નગર, જુન - ૬૨૪
Mo. : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

રોઝા
ના
મસાઈલ

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ
કોલ કુશ્ત્રી પાસે, ડોલ નગર, જુન - ૬૨૪
Mo. : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

સ્ત્રીઓના
વિશિષ્ટ મસાઈલ

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ
કોલ કુશ્ત્રી પાસે, ડોલ નગર, જુન - ૬૨૪
Mo. : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in

દીન કે ત્રીન અહમ ઉસૂલ

ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ
કોલ કુશ્ત્રી પાસે, ડોલ નગર, જુન - ૬૨૪
Mo. : 84017 86172 - www.iickutch.blogspot.in



ઈસ્લામિક ઇન્ફર્મેશન સેન્ટર-કચ્છ

નૂરાની હોટલ પાસે, ડાંડા બજાર, ભૂજ (કચ્છ)
મો. : +91 8401786172
Blog : www.iickutch.blogspot.in